१०. सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन

भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अलग-अलग ढंग से आंदोलन हुए । उनमें एक रास्ता था-सशस्त्र क्रांति का । इसका परिचय हम इस पाठ में प्राप्त करेंगे ।

१८५७ ई. के पूर्व अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध हुए विद्रोहों और १८५७ ई. के स्वतंत्र युद्ध का हमने अध्ययन किया है । उसके पश्चात के समय में रामसिंह कूका ने पंजाब में सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई थी ।

वासुदेव बलवंत फडके : महाराष्ट्र में वासुदेव बलवंत फडके ने अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया । उनका मानना था कि ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध शस्त्रों के साथ ही संघर्ष करना चाहिए । उन्होंने वस्ताद लहूजी सालवे से शस्त्रविद्या का प्रशिक्षण लिया । ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने के लिए उन्होंने पिंडारियों (रामोशियों) को संगठित करके विद्रोह किया । यह विद्रोह विफल रहा । अंग्रेजी शासन ने उन्हें एडन के कारावास में भेजा । वहीं पर उनकी १८८३ ई. में मृत्यु हुई । स्वतंत्रता के लिए उन्होंने सशस्त्र संघर्ष किया ।

वासुदेव बलवंत फडके

चाफेकर भाई (बंधु) : १८९७ ई. में पुणे में प्लेग की महामारी का बंदोबस्त करते समय प्लेग कमिश्नर रैंड ने अन्याय और अत्याचार किए । इसके प्रतिशोध के रूप में दामोदर और बालकृष्ण चाफेकर भाइयों (बंधुओं) ने २२ जून १८९७ ई. को रैंड की हत्या की । दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव इन तीन भाइयों और उनके सहयोगी महादेव रानडे को फाँसी दी गई । एक ही परिवार के तीन भाई देश के लिए शहीद हो गए ।

इसी समय बिहार में मुंडा आदिवासियों ने बिरसा मुंडा के नेतृत्व में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध बहुत बड़ा विद्रोह किया ।

अभिनव भारत : १९०० ई. में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने नाशिक में 'मित्रमेला' नामक क्रांतिकारियों के गुप्त संगठन की स्थापना की । १९०४ ई. में इसी संगठन को 'अभिनव भारत' नाम दिया गया । सावरकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गए । वहाँ से उन्होंने अभिनव भारत संगठन के भारतीय सदस्यों को क्रांतिकारी साहित्य, पिस्तौल आदि सामग्री भेजना प्रारंभ किया । उन्होंने प्रसिद्ध इतालवी क्रांतिकारी जोजेफ मेजिनी का प्रेरणादायी चरित्र लिखा । १८५७ ई. का विद्रोह यह प्रथम भारतीय स्वतंत्रता युद्ध था; यह प्रतिपादित करने वाली '१८५७ चे स्वातंत्र्यसमर' (१८५७ ई. का स्वतंत्रता युद्ध) पुस्तक उन्होंने लिखी।

स्वातंत्र्यवीर वि.दा.सावरकर

क्या तुम जानते हो ?

स्वा.सावरकर को पचास वर्ष सश्रम कारावास की सजा काटने के लिए अंदमान ले जाया गया । वे वहाँ दस वर्ष रहे । सावरकर ने अपने आत्मचरित्र 'माझी जन्मठेप' (मेरा आजीवन कारावास) में अंदमान के उन भयंकर और यातनामय दिनों के अनुभव लिखकर रखे हैं । कालांतर में सरकार ने उन्हें रत्नागिरि में ले जाकर स्थानबद्ध कर दिया । वहाँ सावरकर ने जातिभेद उन्मूलन, अस्पृश्यता निवारण, सहभोजन, भाषा शुद्धीकरण जैसे सामाजिक आंदोलन चलाए । वह एक महान साहित्यकार थे । १९३८ ई. में मुंबई में आयोजित मराठी साहित्य सम्मेलन के वह अध्यक्ष थे ।

सरकार को अभिनव भारत संगठन की गतिविधियों का सुराग लगा । अतः सरकार ने

बाबाराव सावरकर को बंदी बनाया । उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई । इस सजा का प्रतिशोध लेने के लिए अनंत लक्ष्मण कान्हेरे नाम के युवक ने नाशिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या कर दी । सरकार ने अभिनव भारत संगठन से जुड़े लोगों को गिरफ्तार करना प्रारंभ किया । सरकार ने जैक्सन की हत्या का संबंध स्वातंत्र्यवीर सावरकर के साथ जोड़ा और उन्हें बंदी बनाकर उनपर मुकदमा चलाया । न्यायालय ने उन्हें पचास वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई ।

बंगाल तकिारी आंिलन : बंगाल के विभाजन के बाद अंग्रेजों के विरोध में असंतोष और अधिक प्रखर हुआ । स्थानीय विद्रोहों के स्थान पर राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक क्रांतिकारी आंदोलन का उदय होने लगा । देश के विभिन्न हिस्सों में क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित युवा अपने गुप्त संगठन स्थापित करने लगे । अंग्रेज अधिकारियों को भयभीत करना, ब्रिटिश शासन व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देना, अंग्रेज सरकार के प्रति लगनेवाली धाक को नष्ट कर देना, अंग्रेजी सत्ता को उलट देना उनके उद्देश्य थे ।

बंगाल में क्रांतिकारी संगठन 'अनुशीलन समिति' कार्यरत थी । अनुशीलन समिति की पाँच सौ से अधिक शाखाएँ थीं । इस संगठन के प्रमुख अरबिंद घोष के बंधु बारींद्र कुमार घोष थे । इस संगठन को अरबिंद घोष का परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त होता था । इस समिति का बम बनाने का केंद्र कोलकाता के निकट मणिकतल्ला में था ।

१९०८ ई. में अनुशीलन समिति के सदस्यों-खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने किंग्जफोर्ड नाम के न्यायाधीश की हत्या की योजना बनाई परंतु उन्होंने जिस गाड़ी पर बम फेंका; वह गाड़ी किंग्जफोर्ड की नहीं थी । इस हमले में गाड़ी में सवार दो अंग्रेज महिलाओं की मृत्यु हुई । अंग्रेजों के हाथ न लगे; इसलिए प्रफुल्ल चाकी ने स्वयं को गोली मार दी । खुदीराम बोस पुलिस के हाथ लगे । उन्हें फाँसी दी गई । इस कांड की जाँच करते समय पुलिस को अनुशीलन समिति की गतिविधियों की जानकारी मिली । पुलिस ने इस संगठन के सदस्यों की धर-पकड़ प्रारंभ की । अरबिंद बाबू का संबंध बम बनाने के साथ जोड़ने में सरकार विफल रही । सरकार ने उनको निर्दोष रिहा किया । अन्य सदस्यों को लंबी अवधि की सजाएँ सुनाई गईं ।

रासबिहारी बोस और सचिंद्रनाथ सान्याल ने क्रांतिकारी संगठन का जाल बंगाल के बाहर भी फैलाया । पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में क्रांति कार्यों के केंद्र खोले गए । रासबिहारी बोस और उनके सहयोगियों ने वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का साहसिक कार्य किया परंतु इस हमले में लॉर्ड हार्डिंग बच गया ।

मद्रास प्रांत में भी क्रांतिकार्य जारी था। क्रांतिकारी वांची अय्यर ने ऐश नामक अंग्रेज अधिकारी की हत्या की । इसके बाद स्वयं को गोली मारकर उसने अपनी आत्माहुति दी ।

इंतड्या हाउस : भारत में चलने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों को विदेश में रहने वाले भारतीय क्रांतिकारियों से सहायता प्राप्त होती थी । लंदन का इंडिया हाउस ऐसी ही सहायता पहुँचाने वाला महत्त्वपूर्ण केंद्र था । भारतीय देशभक्त पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस की स्थापना की थी । इस संस्था द्वारा इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय युवाओं को छात्रवृत्ति दी जाती थी । स्वातंत्र्यवीर सावरकर को ऐसी छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी । जर्मनी के स्टुटगार्ड में आयोजित विश्व

पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा

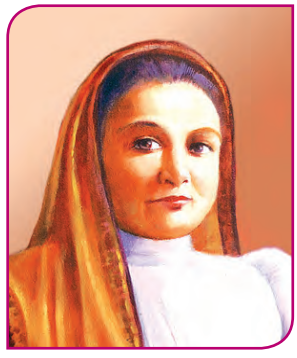

मादाम कामा

समाजवादी परिषद में मादाम कामा ने भारत की स्वतंत्रता का मुद्दा उठाया । इसी परिषद में उन्होंने भारत का ध्वज लहराया था । इंडिया हाउस से संबंधित दूसरा क्रांतिकारी मदनलाल धिंगरा नाम का युवक था । उसने अंग्रेज अधिकारी कर्जन वाइली की हत्या की । परिणामतः धिंगरा को फाँसी पर चढ़ाया गया ।

गदर आंदोलन : प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारी गतिविधियों को गति मिली । क्रांतिकारियों को लगता था कि ब्रिटिशों के शत्रुओं से सहायता लेकर भारत में सत्तांतर किया जा सकता है और इन प्रयासों में भारतीय सैनिकों को साथ लिया जा सकता है । इस अवसर का लाभ उठाने के लिए क्रांतिकारी संगठन स्थापित हुए । उनमें 'गदर' एक प्रमुख संगठन था ।

अमेरिका और कनाडा में रहने वाले भारतीयों ने 'गदर' संगठन की स्थापना की थी । लाला हरदयाल, भाई परमानंद, डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे आदि क्रांतिकारी इस संगठन के प्रमुख नेता थे । 'गदर' का अर्थ 'विद्रोह' है । इस संगठन के मुखपत्र का नाम 'गदर' था । इस मुखपत्र में अंग्रेजी शासन द्वारा भारत पर किए जाने वाले दुष्परिणामों को स्पष्ट किया जाता था । भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा की जाने वाली साहसिक गतिविधियों की जानकारी दी जाती थी । इस प्रकार 'गदर' मुखपत्र ने भारतीयों को राष्ट्रप्रेम और सशस्त्र क्रांति का संदेश दिया ।

अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने हेतु 'गदर' संगठन के नेताओं ने युद्धजन्य परिस्थिति से लाभ उठाने का निश्चय किया । उन्होंने पंजाब में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई । सेना के भारतीय सैनिकों को विद्रोह में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया । निर्णय किया गया कि रासबिहारी बोस और विष्णु गणेश पिंगले विद्रोह का नेतृत्व करेंगे । परंतु किसी के द्वारा मुखबिरी की जाने के कारण अंग्रेजों को इस योजना का सुराग लगा । पिंगले पुलिस के हाथ लग गए । उन्हें फाँसी दी गई लेकिन रासबिहारी बोस चकमा देकर निकल जाने में सफल रहे । उन्होंने जापान जाकर अपना क्रांतिकारी कार्य जारी रखा ।

युद्ध की अवधि में विदेश में कई स्थानों पर क्रांतिकारी आंदोलन चल रहे थे । बर्लिन में वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेन दत्त और हरदयाल ने जर्मन के विदेश विभाग के सहयोग से अंग्रेज विरोधी योजना बनाई । १९१५ ई. में महेंद्र प्रताप, बरकतुल्ला और उबैयदुल्ला सिंधी ने काबुल में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की ।

काकोरी रियं : सरकार ने दमन नीति का अवलंब किया लेकिन क्रांतिकारी आंदोलन नियंत्रण में नहीं आ सका । गांधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन स्थगित किए जाने के बाद कई युवा क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर मुड़े । चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद 'बिस्मिल', योगेश चटर्जी, सचिंद्रनाथ सान्याल आदि क्रांतिकारी इकट्ठे आए । क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए लगने वाला पैसा इकट्ठा करने के लिए रेल में ले जाया जा रहा सरकारी खजाना ९ अगस्त १९२५ ई. को उत्तर प्रदेश के काकोरी रेल स्टेशन के समीप लूटा । इसी को 'काकोरी षडयंत्र' कहा जाता है । सरकार ने तत्काल कार्यवाही कर क्रांतिकारियों को बंदी बना लिया । उनपर मुकदमे चलाए गए । अशफाक उल्ला खान, रामप्रसाद 'बिस्मिल', रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिरी को फाँसी दी गई । लेकिन चंद्रशेखर आजाद पुलिस के हाथ नहीं लगे ।

चंद्रशेखर आजाद

भगत सिंह

दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशन : समाजवादी विचारों से प्रभावित

राजगुरु

सुखदेव

हुए युवाओं ने देशव्यापी क्रांतिकारी संगठन का गठन करने का निश्चय किया । इन युवाओं में चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि प्रमुख युवा थे । ये सभी क्रांतिकारी धर्मनिरपेक्ष विचारधारा से जुड़े हुए थे । १९२८ ई. में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान पर हुई बैठक में इन युवाओं ने 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' नामक संगठन की स्थापना की ।

भारत को अंग्रेजों के शोषण से मुक्त करना इस संगठन का उद्देश्य था । साथ ही, यह संगठन किसानों-श्रमिकों का शोषण करने वाली अन्यायी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को उलट देना चाहता था । भगत सिंह ने सामाजिक न्याय और समता पर आधारित समाज निर्माण करने पर बल दिया ।

हथियार इकट्ठे करना और योजना को कार्यान्वित करना जैसे कार्य इस संगठन के स्वतंत्र विभाग को सौंपे गए थे । इस विभाग का नाम 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' था और चंद्रशेखर 'आजाद' उसके प्रमुख थे ।

इस संगठन के सदस्यों ने अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों को परिणाम दिया । भगत सिंह और राजगुरु ने लाला लजपतराय की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए सैंडर्स नाम के अधिकारी पर गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी ।

इस समय सरकार ने नागरिकों के अधिकारों का हनन करने वाले दो विधेयक केंद्रीय विधान सभा में प्रस्तुत किए । उन विधेयकों का विरोध करने के लिए भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में बम फेंके ।

सरकार ने तत्काल हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के ठिकानों पर धावे बोले । उनमें पुलिस को सैंडर्स की हत्या का सुराग लगा । सरकार ने क्रांतिकारियों की धर-पकड़ प्रारंभ की । उनपर राजद्रोह के मुकदमे चलाए गए । २३ मार्च १९३१ ई. को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर की जेल में फाँसी दी गई । चंद्रशेखर आजाद अंत तक पुलिस के हाथ नहीं लगे । आगे चलकर इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में वे शहीद हो गए ।

चटगाँव श गार पर हमला : सूर्य सेन बंगाल के चटगाँव में कार्यरत क्रांतिकारी गुट के प्रमुख थे। उन्होंने अपने साथ अनंत सिंह, गणेश घोष, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वड्डेदार जैसे निष्ठावान क्रांतिकारियों की सेना तैयार की । उनकी सहायता से सूर्य सेन ने चटगाँव के शस्त्रागार पर हमले की योजना बनाई । इस योजना के अनुसार १८ अप्रैल १९३० ई. को क्रांतिकारियों ने चटगाँव के दो शस्त्रागारों में संग्रहित शस्त्र अपने अधिकार में कर लिये । उन्होंने टेलीफोन और टेलीग्राफ व्यवस्था की तोड़-फोड़ की और संचार व्यवस्था को ठप्प करने

सूर्य सेन

कल्पना दत्त

प्रीतिलता वड्डेदार

में वे सफल रहे । इसके पश्चात उन्होंने अंग्रेज सेना के साथ रोमांचक संघर्ष किया ।

१६ फरवरी १९३३ ई. को सूर्य सेन व उनके कुछ सहयोगी पुलिस के हाथ लगे । सूर्य सेन और उनके बारह सहयोगियों को फांसी की सजा दी गई । कल्पना दत्त को आजीवन कारावास का दंड दिया गया । प्रीतिलता वड्डेदार ने पुलिस के हाथ में पड़ने से बचने के लिए आत्माहुति दी ।

चटगाँव में हुए विद्रोह के कारण क्रांतिकारी आंदोलन को गति मिली । दो विद्यालयीन छात्राओं–शांति घोष और सुनीति चौधरी ने जिला न्यायाधीश की हत्या की तो बीना दास नाम की युवती ने कोलकाता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गवर्नर पर गोलियाँ चलाईं । इस प्रकार इस अवधि में कई क्रांतिकारी घटनाएँ हुईं ।

जलियाँवाला बाग नरसंहार के लिए ओडवायर नाम का अधिकारी उत्तरदायी था । सरदार ऊधम सिंह ने इंग्लैंड में १९४० ई. में उसकी हत्या की ।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । ब्रिटिश सत्ता के साथ लड़ते हुए क्रांतिकारियों ने साहस और संकल्प के दर्शन कराए । उनका राष्ट्रप्रेम और समर्पण भाव अतुलनीय था । उनका बलिदान भारतीयों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुआ ।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पुनः लिखो ।

(पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा, मित्रमेला, रामसिंह कूका)

(१) स्वा.सावरकर ने ...... नामक क्रांतिकारियों की गुप्त संगठन स्थापन की ।

(२) पंजाब में ..... ने सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई ।

(३) इंडिया हाउस की स्थापना ..... ने की ।

२. निम्न सारणी पूर्ण करो ।

क्रांतिकारी	संगठन
....	अभिनव भारत
बारींद्र कुमार घोष	....
चंद्रशेखर आजाद	....

३. निम्न घटनाओं को कारणसहित स्पष्ट करो ।

(१) चाफेकर भाइयों (बंधुओं) ने रैंड की हत्या की ।

(२) खुदीराम बोस को फाँसी दी गई ।

(३) भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में बम फेंके ।

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो ।

(१) चटगाँव शस्त्रागार पर किए गए हमले का वृत्तांत लिखो ।

(२) सशस्त्र क्रांति में स्वा.सावरकर के योगदान को स्पष्ट करो ।

(१) क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित नाटक, फिल्म देखो । उसमें जो प्रसंग तुम्हें अच्छा लगा; उसका कक्षा में नाट्यीकरण करो ।

(२) क्रांतिकारियों की कहानियों पर आधारित हस्तलेख तैयार करो ।

9BH9Y6